



International Journal of Advance Studies and Growth Evaluation

राजस्थान में प्रवास: कारणों और परिणामों का विश्लेषण

*¹ चंचल वर्मा एवं ²डॉ. विपिन सैनी

*¹ शोधार्थी, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान, भारत।

² आचार्य, राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर, राजस्थान, भारत।

Article Info.

E-ISSN: 2583-6528

Impact Factor (SJIF): 6.876

Peer Reviewed Journal

Available online:

www.alladvancejournal.com

Received: 22/June/2025

Accepted: 20/July/2025

सारांश:

मानव का एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरण 'प्रवास' कहलाता है। प्रवासन का अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह किसी भी क्षेत्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थिति पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। प्रस्तुत शोध पत्र में द्वितीयक स्रोतों से आंकड़ों का संकलन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रवास के कारणों व परिणामों का विश्लेषण किया गया है, साथ ही भारत व राजस्थान के प्रवास कारणों का तुलनात्मक अध्ययन किया है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत के कुल प्रवास में राजस्थान प्रवासन की हिस्सेदारी 4.84% रही। राजस्थान में सर्वाधिक प्रवास विवाह (64%) के कारण हुआ है, जिसमें मूलतः भागीदारी महिलाओं (99%) की रही, वहीं पुरुषों द्वारा सर्वाधिक प्रवास रोजगार (85%) के कारण किया गया। प्रवासन से जहाँ जनसंख्या असंतुलन, शहरीकरण, शहरों में बढ़ता जनसंख्या-संसाधन दबाव एवं पर्यावरण प्रदूषण जैसी नकारात्मक स्थितियाँ देखने को मिलती हैं, वहीं मिश्रित संस्कृति व धन प्रेषण से आर्थिक सशक्तिकरण जैसी सकारात्मक स्थितियाँ भी देखने को मिलती हैं। यह अध्ययन राजस्थान में प्रवासन के कारणों एवं परिणामों की विस्तृत समझ प्रदान करता है, जो राज्य सरकार की विभिन्न सामाजिक-आर्थिक नीति निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है।

*Corresponding Author

चंचल वर्मा

शोधार्थी, महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय,
बीकानेर, राजस्थान, भारत।

मुख्य शब्द: जनसांख्यिकी, आप्रवासन, पुरुष-महिला अनुपात, सामाजिक-आर्थिक कारण

प्रस्तावना:

किसी भी स्थान की जनसंख्या परिवर्तन के लिए मूलतः तीन कारक उत्तरदायी होते हैं, जन्मदर, मृत्युदर एवं प्रवास। किसी स्थान की जनसंख्या वृद्धि दो प्रकार से हो सकती है प्रथम वहाँ जन्म लेने वाले व्यक्तियों से (उच्च जन्म दर), दूसरा बाहर से आकर उस स्थान पर बसने या रहने वाले लोगों से। वर्तमान समय में तीव्र गति से बदलती जनसंख्या स्वरूप का गहराई से अध्ययन करने हेतु प्रवास का अध्ययन करना परम आवश्यक है। हाल ही के परिप्रेक्ष्य में प्रवास एक सार्वभौमिक घटना बन गई है। तीव्र औद्योगीकरण, बढ़ते शहरीकरण व आर्थिक विकास के साथ साथ लोगों में वृहद स्तर पर पलायन की प्रक्रिया देखी गई। यह पलायन मुख्यतः गांवों से नगरों तथा नगरों से महानगरों की ओर हुआ है। इस प्रक्रिया से शहरीकरण की प्रक्रिया में तेजी से वृद्धि हुई है।

परिभाषाएँ

प्रवास मानवीय गतिशीलता का परिणाम है। प्रवास को विभिन्न विद्वानों ने अलग अलग प्रकार से परिभाषित किया है।

प्रवास सामान्यतः निवास स्थान को बदलते हुए एक भौगोलिक इकाई से दूसरी भौगोलिक इकाई के लिए भौगोलिक गतिशीलता का एक रूप है। (संयुक्त राष्ट्र संघ) प्रवास सांस्कृतिक वितरण तथा सामाजिक एकता का उपकरण है। (बोग, 1959) जनसंख्या प्रवास मात्र स्थान परिवर्तन ही नहीं बल्कि किसी प्रदेश के क्षेत्रीय तत्व और क्षेत्रीय संबंधों को समझने का प्रमुख आधार भी है। (गोसल, 1961) प्रवासी वह व्यक्ति है, जो अपने सामान्य निवास स्थान को छोड़कर अंतरराष्ट्रीय सीमा के पार या किसी राज्य के भीतर स्थानांतरित हो रहा है या स्थानांतरित हो चुका है (इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशनफॉर फॉर माइग्रेशन)

अध्ययन क्षेत्र

राजस्थान, जिसे 'राजपूताना' के नाम से भी जाना जाता है, का भौगोलिक क्षेत्रफल 3,42,239 वर्ग किलोमीटर है जो कि 7 संभागों 33 जिलों (वर्तमान में 41 जिले) में विभक्त है। यह देश के कुल भौगोलिक क्षेत्र का 10.41% है। स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अनुसार 1 मार्च 2024 में राजस्थान की जनसंख्या लगभग

8.19 करोड़ अनुमानित है। जनसंख्या के आधार पर यह देश का सातवाँ बड़ा राज्य है। यह देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित है। पंजाब, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्य प्रदेश एवं गुजरात राज्य इसकी अंतर्राज्यीय सीमा बनाते हैं। पाकिस्तान के साथ 1070 किलोमीटर लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा रेखा बनाता है।

2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान की जनसंख्या 6.85 करोड़ है। 2001 से 2011 के मध्य राजस्थान की जनसंख्या में 12041249 की वृद्धि हुई है। यह भारत की कुल जनसंख्या का 5.65% है। जयपुर 6626178 के साथ राजस्थान का सर्वाधिक आबादी वाला जिला है। 6.85 करोड़ लोगों में से 5.15 करोड़ (75.12%) ग्रामीण क्षेत्र में तथा 1.70 करोड़ (24.9%) शहरी क्षेत्रों में निवास करते हैं। प्रदेश की दशकीय वृद्धि दर 21.3% है, जो राष्ट्रीय दशकीय वृद्धि दर (17.7%) से अधिक है। यहाँ लिंगानुपात (प्रति 1000 पुरुषों पर महिलाओं की संख्या) 928 है जो कि राष्ट्रीय लिंगानुपात 943 से कम है। राज्य में साक्षरता 66.1% है, जिसमें पुरुष साक्षरता दर 79.2% तथा महिला साक्षरता दर 64.6% है। राष्ट्रीय साक्षरता औसत से तुलना करने पर यह ज्ञात होता है कि राज्य में औसत साक्षरता व महिला साक्षरता की स्थिति अत्यंत पिछड़ी है।

उद्देश्य

1. अध्ययन क्षेत्र में प्रवास के कारणों का अध्ययन करना।
2. अध्ययन क्षेत्र में प्रवास के परिणामों का अध्ययन करना।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध पत्र द्वितीय स्त्रोतों से प्राप्त आंकड़ों पर आधारित है। इस हेतु विभिन्न प्रकार के पुस्तकों, जनरल व आर्टिकल्स, रिपोर्ट्स, वेबसाइट्स और भारतीय जनगणना के आंकड़ों का उपयोग किया गया है। प्रवास के जनसांख्यिकीय आंकड़ों हेतु जनगणना 2011 की डी सीरीज की तालिकाओं का प्रयोग किया गया है। इन तालिकाओं से व्युत्पन्न तालिकायें का निर्मित की तत्पश्चात अंतिम तालिकाओं का निर्माण किया गया। शोध पत्र लेखन हेतु एम.एस.वर्ड सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है, वहीं तालिकाओं एवं विभिन्न प्रकार के लेखाचित्र एवं रेखाचित्र हेतु एम.एस.एक्सेल सॉफ्टवेयर का उपयोग किया गया है।

प्रवास के कारण

प्रवास के कारणों का हम निम्न प्रकार से विश्लेषण कर सकते हैं-

भौतिक कारक

प्राकृतिक आपदाओं यथा बाढ़, सूखा, भूकंप, ज्वालामुखी आदि के कारण लोग अपने उद्गम क्षेत्र को त्याग कर अन्यत्र स्थानों पर प्रवास करते हैं। वहीं जलवायु परिवर्तन के कारण यदि किसी क्षेत्र विशेष में जीवनयापन हेतु प्रतिकूल दशाएँ उत्पन्न हो जाए तो लोग बेहतर जीवनयापन की तलाश में पलायन करते हैं। इसके अलावा अन्य प्राकृतिक संसाधनों यथा जल, कृषि योग्य भूमि में कमी होना प्रवास का प्रमुख कारण है।

आर्थिक कारण

प्रवास का सबसे मूल एवं प्राथमिक कारण आर्थिक ही माना जाता है। मानव अपने मूलभूत से लेकर उच्च आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपना मूल स्थान त्याग कर अन्यत्र पलायन करता है। इस हेतु वह ऐसे क्षेत्रों पर प्रवास करता है जहाँ उपजाऊ भूमि, खनिज संसाधन, औद्योगिक इकाइयाँ व अन्य रोजगार के साधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बढ़ते अंतरराष्ट्रीय प्रवास का मुख्य कारण भी आर्थिक ही है। निम्न आय वर्ग से लेकर उच्च आय वर्ग तक सभी में अंतरराष्ट्रीय प्रवास का मुख्य कारण अर्थार्जन करना ही है।

सामाजिक और सांस्कृतिक कारण

प्राचीन काल में धर्म प्रचार हेतु अंतर्राज्यीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय प्रवास तक किया जाता था। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक विवाह (महिलाओं में) प्रवास का मुख्य कारण रहा है। इसके अलावा लोग उच्च शिक्षा प्राप्ति व बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ प्राप्त करने के लिए भी प्रवास करते हैं। कभी-कभी जाति व धर्म के दबाव के कारण भी लोग एकल या सामूहिक प्रवास करते हैं। (कुलधरा ग्राम से पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा किया गया सामूहिक प्रवास)

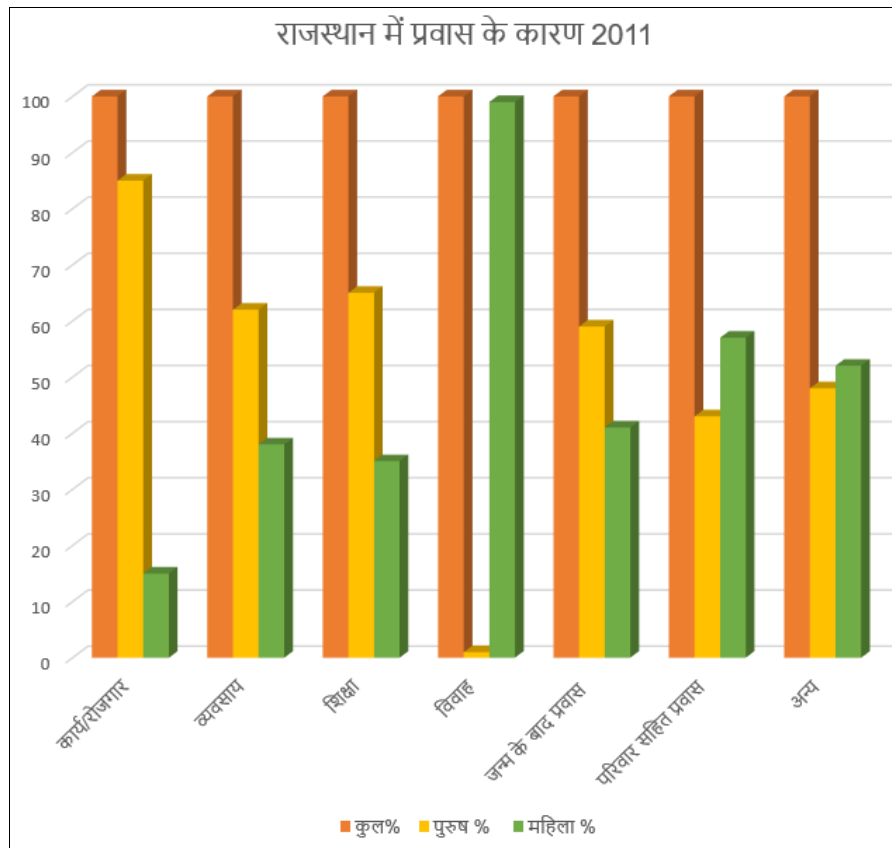
राजनीतिक कारण

युद्ध, हिंसा, आतंकवादी गतिविधियाँ, राजनीतिक अस्थिरता, सरकारों द्वारा किसी विशेष वर्ग हेतु अपनाई गई दमनकारी व भेदभावपूर्ण नीतियाँ आदि प्रवास के प्रमुख राजनीतिक कारण हैं।

सारणी संख्या 1.1: राजस्थान में प्रवास के कारण 2011

कारण	कुल	कुल%	पुरुष	पुरुष%	महिला	महिला%
कार्य या रोजगार	17,09,602	100	14,45,847	85	2,63,755	15
व्यवसाय	75,006	100	46,717	62	28,289	38
शिक्षा	1,62,998	100	1,05,260	65	57,738	35
विवाह	1,40,89,571	100	1,32,288	1	1,39,57,283	99
जन्म के बाद प्रवास	9,76,558	100	5,80,440	59	3,96,118	41
परिवार सहित प्रवास	26,47,776	100	11,35,712	43	15,12,064	57
अन्य	24,09,971	100	11,56,658	48	12,53,313	52

स्त्रोत- भारतीय जनगणना 2011



चित्र संख्या 1.1: राजस्थान में प्रवास के कारण 2011

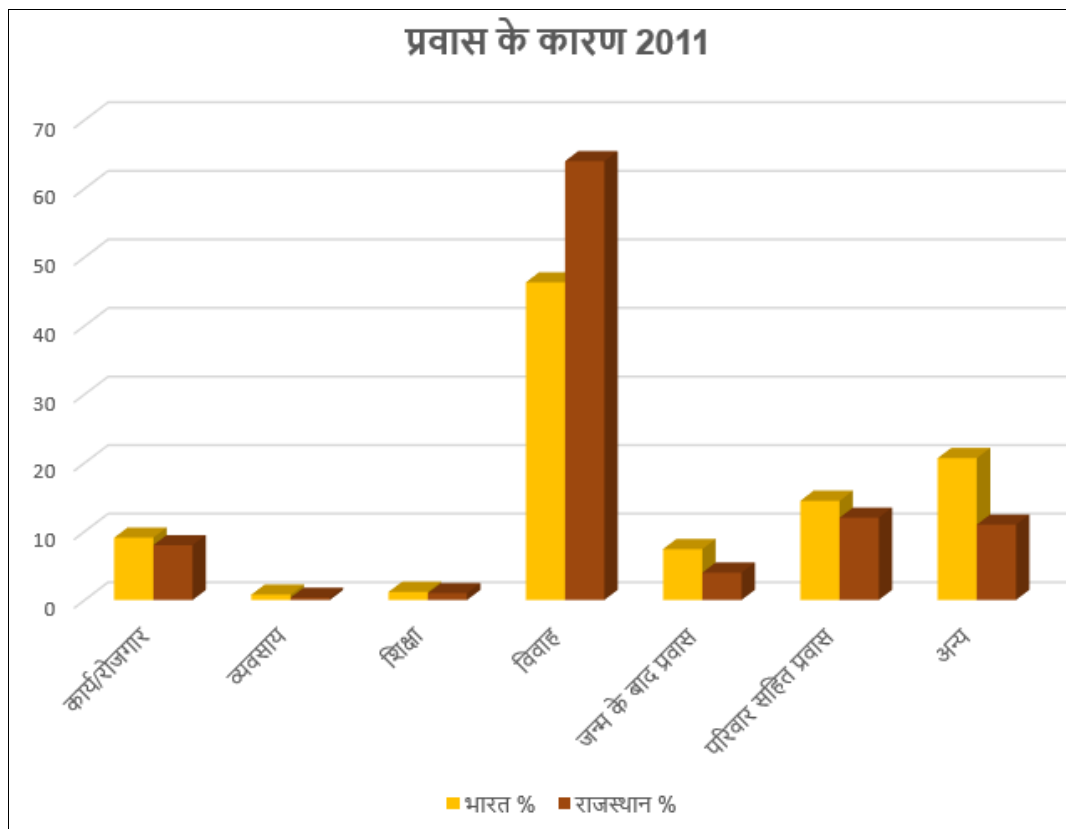
भारतीय जनगणना में रोजगार, व्यवसाय, शिक्षा, विवाह, जन्म के बाद प्रवास, परिवार सहित प्रवास, प्राकृतिक आपदाओं व अन्य को प्रमुख प्रवास के कारण माना है। जनगणना 2011 के अनुसार कुल प्रवास में रोजगार की 8%, व्यवसाय की 0.33%, शिक्षा की 1%, विवाह की 64%, जन्म के बाद प्रवास की 4%, परिवार सहित प्रवास की 12% व अन्य की 11% हिस्सेदारी है। उपर्युक्त तालिका के विश्लेषण अनुसार सर्वाधिक प्रवास विवाह के कारण हुआ है, जिसमें पुरुष 1% व

महिलाएं 99% है। इसके बाद दूसरा प्रमुख कारण परिवार सहित प्रवास 12% रहा है। लैंगिक विश्लेषण से ज्ञात होता है कि कुल प्रवास में रोजगार के कारण सर्वाधिक प्रवास (85%) पुरुषों द्वारा किया गया एवं दूसरा प्रमुख कारण शिक्षा (65%) रहा। वहीं महिलाओं में प्रवास का प्राथमिक कारण विवाह (99%) रहा, जबकि दूसरा प्रमुख कारण परिवार सहित प्रवास (57%) रहा।

सारणी संख्या: 1.2: भारत व राजस्थान में प्रवास के कारण 2011

कारण	भारत		राजस्थान	
	कुल	%	कुल	%
कार्य या रोजगार	41422917	9-09	17,09,602	8
व्यवसाय	3590487	0-79	75,006	0-34
शिक्षा	5457556	1-20	1,62,998	1
विवाह	211186431	46-33	1,40,89,571	64
जन्म के बाद प्रवास	33855865	7-43	9,76,558	4
परिवार सहित प्रवास	65959915	14-47	26,47,776	12
अन्य	94314450	20-69	24,09,971	11
कुल	455787621	100-00	2,20,71,482	100

स्रोत-भारतीय जनगणना 2011



चित्रसंख्या 1.2: भारत व राजस्थान में प्रवास के कारण (2011)

भारत व राजस्थान में प्रवास के कारणों के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि कुल भारतीय प्रवास में राजस्थान प्रवास में 4.84% की भागीदारी रखता है। प्रवास का सर्वप्रमुख कारण 'विवाह' है। भारत में कुल प्रवास में विवाह की हिस्सेदारी 46.33% है जो प्रवासियों के लगभग आधे से थोड़ा ही कम है वहीं दूसरी ओर राजस्थान के कुल प्रवास में विवाह की हिस्सेदारी 64% है, जो कुल प्रवास का आधे से भी अधिक भाग है। प्रवास का दूसरा प्रमुख कारण 'परिवार सहित प्रवास' है, जो भारत में 14.47% तथा राजस्थान में 11% है। रोजगार, व्यवसाय एवं शिक्षा के क्षेत्र में भारत और राजस्थान दोनों में ही प्रतिशत लगभग समान है।

प्रवास के परिणाम

प्रवास किसी भी स्थान के जनसांख्यिकीय संरचना बदलने में महत्वपूर्ण उत्तरदायी कारक है। प्रवास उद्गम क्षेत्र व गंतव्य क्षेत्र दोनों ही स्थानों को प्रभावित करता है प्रवास की प्रभावों को हम निम्न प्रकार से विश्लेषित कर सकते हैं।

- 1. आर्थिक प्रभाव:** प्रवास से जनसंख्या-संसाधन अनुपात परिवर्तित होता है। यदि लोग जनाधिक्य वाले क्षेत्र से जनसंख्या कमी वाले क्षेत्रों में प्रवास करते हैं तो उस क्षेत्र में जनसंख्या संसाधन अनुपात संतुलित हो जाता है। प्रवास से गंतव्य क्षेत्रों में पर्याप्त मात्रा में श्रम आपूर्ति हो जाती है। प्रवास से कुछ क्षेत्रों में निवेश और व्यापार का प्रवाह बढ़ता है, जो आर्थिक समृद्धि के रूप में परिलक्षित होता है। धनार्जन करने हेतु ही कुशल, अर्धकुशल श्रमिक अंतरराष्ट्रीय प्रवास करते हैं तथा अपने संचित पूंजी को प्रेषण के रूप में पुनः अपने देश में भेजते हैं। मस्तिष्क प्रवाह भी आर्थिक प्रभाव का ही एक रूप है। विकसित एवं विकासशील देशों के अति कुशल, उच्च प्रशिक्षित लोग अपने उच्च आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विकसित देशों में प्रवास कर जाते हैं।
- 2. सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव:** प्रवास के कारण दो भिन्न संस्कृतियों के लोग आपस में मिलते हैं, जिनमें भाषायी, खानपान, वेशभूषा आदि संबंधी अनेक विविधताएं पाई जाती हैं। प्रवास के

कारण विभिन्न संस्कृतियों का मिश्रण होता है। कभी-कभी किसी एक समुदाय के लोगों द्वारा अपनी संस्कृति को बचाए रखने के लिए किए गए प्रयासों से क्षेत्र में सामाजिक तनाव की स्थिति भी उत्पन्न हो जाती है। यह भी माना जाता है कि शहरों में प्रवास करके आये निम्न आय वर्ग के लोगों में आशानुरूप रोजगार न मिलने के अभाव में खिन्नता एवं अवसाद की स्थिति पाई जाती है, जिसके परिणामस्वरूप ये लोग नशाखोरी व आपराधिक कार्यों में लिप्त हो जाते हैं।

- 3. जनसांख्यिकीय प्रभाव:** प्रवासियों द्वारा उद्गम स्थान पर जनसंख्या की कमी तथा गंतव्य स्थान पर जनसंख्या की अधिकता कर दी जाती है। इससे आयु संघटन व लिंग संघटन भी परिवर्तित होता है। ज्ञातव्य है कि प्रवास उच्च आयुवर्ग के व्यक्तियों की अपेक्षा युवा वर्ग में अधिक पाया जाता है। वहीं महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में प्रवास की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। अतः उद्गम क्षेत्र में वृद्ध, महिलाओं एवं बच्चों की जनसंख्या में वृद्धि हो जाती है अर्थात् आश्रित जनसंख्या की अधिकता हो जाती है, वहीं कार्यशील जनसंख्या की कमी हो जाती है। दूसरी ओर गंतव्य क्षेत्र में कार्यशील व युवा जनसंख्या की अधिकता हो जाती है एवं मुख्यतया पुरुषों द्वारा प्रवास करने से लिंगानुपात की स्थिति गिर जाती है।
- 4. पर्यावरणीय प्रभाव:** लोगों द्वारा रोजगार, उच्च शिक्षा प्राप्ति, अन्य सुख-सुविधाओं की प्राप्ति हेतु नगरों एवं महानगरों की ओर पलायन किया जाता है। नगरों में विशाल जनसंख्या के निवास की सुविधा न होने के कारण निम्न आय वर्ग के लोगों द्वारा झुग्गी झोपड़ियां विकसित कर ली जाती हैं। इन क्षेत्रों में बिजली, पानी व अन्य मूलभूत सुविधाओं की आवश्यकताओं की पूर्ति भी ठीक प्रकार से नहीं हो पाती है। चारों ओर फैली गंदगी के परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के पर्यावरणीय समस्याएं जन्म लेती हैं यथा- जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण और ठोस कचरा प्रबंधन आदि।

निष्कर्ष:

प्रवास लोगों के एक स्थान से दूसरे स्थान पर के स्थानांतरण की प्रक्रिया है। रोजगार प्राप्ति, उच्च शिक्षा के अवसर, अच्छी स्वास्थ्य सुविधाएं व अन्य सुविधाओं की प्राप्ति के लिए प्रवास किया जाता है। राजस्थान में पुरुषों के प्रवास का प्रमुख कारण 'रोजगार' है, वहीं महिलाएं मुख्यतः किसी न किसी रूप में पुरुषों के साथ प्रवास करती हैं यथा- विवाह एवं परिवार सहित प्रवास। प्रवास से गंतव्य क्षेत्र में जनाधिक्य की स्थिति उत्पन्न हो जाती है, परिणामतः विभिन्न प्रकार की पर्यावरणीय समस्याएं जन्म लेती हैं यथा जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, भूमि प्रदूषण आदि। यद्यपि राजस्थान सरकार द्वारा प्रवासियों की मदद करने हेतु अनेक प्रकार की योजना एवं कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं यथा-निर्माण श्रमिकों को हेतु निर्माण श्रमिक शिक्षा व कौशल विकास योजना, 'इ-श्रम पोर्टल' (असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डेटाबेस), राजस्थान कौशल एवं आजीविका विकास निगम द्वारा 'प्रवासन सहायता केंद्र', 'ओवरसीज प्लेसमेंट ब्यूरो एवं राजस्थान प्रवासी श्रमिक कल्याण प्रकोष्ठ', 'प्रस्थान पूर्व दिशा-निर्देश प्रशिक्षण कार्यक्रम' आदि (आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के अनुसार)। फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में प्रवास की तीव्र प्रक्रिया को रोकने के लिए आवश्यक है कि सरकारों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसरों की बढ़ोतरी की जाए। ग्रामीण क्षेत्रों में सभी मूलभूत सुविधाएं यथा परिवहन सुविधा और सड़कें, शुद्ध पेयजल, पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएं, व्यवसाय व सेवा क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। प्रवासन के स्थायी समाधान के लिए दीर्घकालिक योजनाएं बनानी होंगी ताकि प्रवासियों को वापस अपनी भूमि पर रहने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके।

References

1. Bogue DI. Internal Migrations. The Study of Population: An Inventory and Appraisal, Chicago University Press, Chicago, 1959.
2. Chandna RC. A Geography of Population. Delhi: Kalyani Publishers, 2017.
3. Directorate EA. Rajasthan Economic Review. Jaipur: Statistic Department, 2023-2024.
4. Gosal GS. Internal Migration in India-A Regional Analysis. *Indian Geographical Journal*. 1961, 36.
5. Morya SD. Population Geography. Prayagraj: Sharda pustak bhawan, 2021.
6. Bogue DI. Internal Migrations. The Study of Population: An Inventory and Appraisal, Chicago University Press, Chicago, 1959.
7. Chandna RC. A Geography of Population. Delhi: Kalyani Publishers, 2017.
8. Directorate EA. Rajasthan Economic Review. Jaipur: Statistic Department, 2023-2024.
9. Gosal GS. Internal Migration in India-A Regional Analysis. *Indian Geographical Journal*, 1961, 36.
10. Morya SD. Population Geography. Prayagraj: Sharda pustak bhawan, 2021.
11. Bala A. Migration in India: Causes and Consequences. *International Journal of Advanced Educational Research*, 2017, 54-56.
12. Bhagat BR. Emerging Pattern of Urbanization in India. *Economic and Political Weekly*, 2011, 10-12.
13. Kaul K. Migration and Society. New Delhi: Rawat Publication, 2006.
14. Khullar DR. India: A comprehensive Geography. New Delhi: Kalyani Publishers, 2014.
15. Kundu A, Sarsawati L. Migration and exclusionary urbanization in India. *Economic and Political Weekly*. 2012; 47(26-27):219-227.

16. Kundu R. A Study on Internal Migration in India. *International Journal of Creative Research Thoughts*, 2018, 1294-1298.
17. Sarkar P. An Overview of Out-Migration from Uttar Pradesh Using Census 2011. *Journal of Migration Affaris*, 2020, 58-66.
18. Singh RN. Impact of Out-Migration on Socio-Economic Condition: A case study of Khutana Block. Delhi: Amar Prakashan, 1989.
19. Srivastava R. Labour Migration in India: Recent Trends, Patterns and Policy issues. *The Indian Journal of Labour Economis*. 2011; 54(3):411-440.